iJRASET
International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology



INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 14 **Issue:** XI **Month of publication:** November 2026

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2026.85621

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 14 Issue XI Nov 2026- Available at www.ijraset.com

झुंझुनू जिले में ग्राम पंचायत चुनाव एवं स्थानीय जनमत निर्माण: नूनिया गोठड़ा ग्राम पंचायत के वर्ष 2026 के सरपंच चुनाव का एक अनुभवमूलक अध्ययन

शोधकर्ता: डॉ नवीन कुमार सहायक आचार्य, सेठ श्री केदारनाथ राजकीय महाविद्यालय गुढ़ा झुंझुनूं राजस्थान

सारांश: *भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति उसकी जमीनी लोकतांत्रिक संस्थाओं में निहित है। ग्राम पंचायत चुनाव ग्रामीण समाज में राजनीतिक भागीदारी, नेतृत्व निर्माण, सामाजिक संबंधों, जातीय समीकरणों, आर्थिक प्रभाव, युवा चेतना तथा स्थानीय जनमत निर्माण की प्रक्रिया को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। 73वें संविधान संशोधन के पश्चात पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक आधार प्राप्त हुआ, जिससे ग्रामीण स्तर पर लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और जनभागीदारी को संस्थागत स्वरूप मिला।*

प्रस्तुत शोध-पत्र राजस्थान के झुंझुनू जिले की चिड़ावा पंचायत समिति के अंतर्गत स्थित नूनिया गोठड़ा ग्राम में वर्ष 2026 में संपन्न सरपंच चुनाव का अनुभवमूलक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन में ग्राम की सामाजिक संरचना, जातीय समीकरण, पारिवारिक संबंधों, स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तियों, युवा मतदाताओं, चुनावी रणनीति, बूथ प्रबंधन तथा मतदाताओं के राजनीतिक व्यवहार का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में 28 अक्टूबर 2026 को हुए पंचायत समिति चुनाव और उसके साथ विकसित हुए स्थानीय राजनीतिक वातावरण को भी संदर्भ के रूप में सम्मिलित किया गया है।

चुनाव परिणाम के अनुसार सरपंच पद के लिए विनोद जाखड़ को 1386 मत तथा मंजू देवी पत्नी अमर सिंह को 1087 मत प्राप्त हुए। इस प्रकार विनोद जाखड़ ने 299 मतों के अंतर से विजय प्राप्त की। अन्य प्रत्याशियों को अपेक्षाकृत कम मत प्राप्त हुए। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि चुनावी परिणाम केवल जातीय बहुलता या प्रत्याशी की व्यक्तिगत लोकप्रियता से निर्धारित नहीं होते, बल्कि सामाजिक पूँजी, पारिवारिक नेटवर्क, आर्थिक-सामाजिक सहयोग, युवा समूहों की सक्रियता और प्रभावी बूथ प्रबंधन जैसे कारक भी चुनावी परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं।

अध्ययन का आधार स्थानीय स्तर पर प्राप्त सूचनाएँ, उपलब्ध चुनाव परिणाम तथा क्षेत्रीय अनुभव हैं। अतः इसके निष्कर्षों को नूनिया गोठड़ा के संदर्भ में एक प्रारंभिक अनुभवमूलक विश्लेषण के रूप में देखा जाना चाहिए।

मुख्य शब्द: *पंचायती राज, ग्राम पंचायत चुनाव, स्थानीय जनमत, नूनिया गोठड़ा, जातीय समीकरण, सामाजिक पूँजी, युवा भागीदारी, बूथ प्रबंधन, ग्रामीण लोकतंत्र।*

1. प्रस्तावना

भारतीय लोकतंत्र केवल संसद और विधानसभाओं तक सीमित नहीं है। इसकी वास्तविक व्यापकता गाँवों में स्थापित लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से दिखाई देती है। भारत में ग्राम पंचायतें लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की आधारभूत इकाई हैं। ग्राम पंचायत चुनावों के माध्यम से ग्रामीण नागरिक अपने स्थानीय प्रतिनिधियों का चयन करते हैं तथा गाँव के विकास, सार्वजनिक सुविधाओं, सामाजिक न्याय और प्रशासनिक प्राथमिकताओं के निर्धारण में भागीदारी करते हैं।

ग्राम पंचायत चुनावों का महत्व केवल प्रतिनिधि चुनने तक सीमित नहीं है। ये चुनाव ग्रामीण समाज में नेतृत्व की प्रकृति, जातीय संबंधों, पारिवारिक प्रभाव, आर्थिक संसाधनों, सामाजिक प्रतिष्ठा, राजनीतिक चेतना और जनमत निर्माण की प्रक्रिया को भी उजागर करते हैं। गाँव में मतदाता का निर्णय अनेक बार व्यक्तिगत अनुभव, पारिवारिक संबंध, सामाजिक व्यवहार, प्रत्याशी की उपलब्धता तथा स्थानीय विकास की अपेक्षाओं से प्रभावित होता है।

©IJRASET: All Rights are Reserved

राजस्थान का झुंझुनू जिला शेखावाटी क्षेत्र का महत्वपूर्ण जिला है। यहाँ शिक्षा, सैन्य सेवा, व्यवसाय, सामाजिक संगठनों तथा राजनीतिक गतिविधियों की परंपरा रही है। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका स्थानीय नेतृत्व और सामाजिक परिवर्तन के अध्ययन के लिए विशेष महत्व रखती है।

इसी संदर्भ में नूनिया गोठड़ा ग्राम का वर्ष 2026 का सरपंच चुनाव अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह चुनाव स्थानीय सामाजिक संबंधों, पारिवारिक प्रभाव, युवा मतदाताओं की सक्रियता तथा चुनावी प्रबंधन की भूमिका को समझने का अवसर प्रदान करता है।

2. अध्ययन क्षेत्र का परिचय: नूनिया गोठड़ा

नूनिया गोठड़ा गाँव राजस्थान के झुंझुनू जिले की चिड़ावा पंचायत समिति के अंतर्गत स्थित है। यह गाँव झुंझुनू और चिड़ावा के बीच सड़क मार्ग पर स्थित है। स्थानीय स्तर पर इस गाँव की पहचान शिक्षा, सैन्य सेवा, व्यवसाय तथा विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्यरत लोगों के कारण रही है।

गाँव से संबंधित स्थानीय जानकारी के अनुसार यहाँ डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, व्यवसायी और सेना में कार्यरत व्यक्तियों की अच्छी उपस्थिति है। इससे गाँव में शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता का प्रभाव दिखाई देता है। गाँव के अनेक परिवारों का संबंध रोजगार और व्यवसाय के कारण अन्य शहरों एवं क्षेत्रों से भी जुड़ा हुआ है।

यह स्थिति चुनावों के दौरान महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि गाँव से बाहर रहने वाले मतदाताओं का मतदान के दिन गाँव पहुँचना प्रत्याशियों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती और अवसर दोनों होता है।

2.1 सामाजिक संरचना

स्थानीय स्तर पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार गाँव में जाट समुदाय की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। जाट समुदाय के अतिरिक्त गोस्वामी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, कुमावत, ब्राह्मण, जांगिड़, सांसी, मनियार और नाई सहित अन्य समुदायों की उपस्थिति भी बताई गई है। स्थानीय अनुमान के अनुसार गाँव में लगभग 3000 मतदाता हैं। इनमें जाट मतदाताओं की संख्या सर्वाधिक है। गोस्वामी, अनुसूचित जाति, कुमावत समुदाय के मतदाताओं की संख्या भी बहुलता में बताई गई है।

इस सामाजिक संरचना का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ग्रामीण चुनावों में जातीय पहचान कभी-कभी राजनीतिक लामबंदी का आधार बनती है। हालांकि किसी समुदाय के सभी मतदाता एक ही प्रत्याशी को वोट देते हैं, ऐसा मानना उचित नहीं है। व्यक्तिगत संबंध, परिवार, स्थानीय विवाद, विकास संबंधी अपेक्षाएँ और प्रत्याशी का व्यवहार भी मतदान निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं।

2.2 शिक्षा एवं सामाजिक गतिशीलता

नूनिया गोठड़ा में शिक्षा और विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में लोगों की भागीदारी स्थानीय राजनीति को प्रभावित करने वाले कारक हो सकते हैं। शिक्षित युवाओं की बढ़ती संख्या, सेना में कार्यरत और सेवानिवृत्त व्यक्तियों का अनुभव, तथा व्यवसाय से जुड़े परिवारों का सामाजिक संपर्क गाँव में नेतृत्व और राजनीतिक चेतना को प्रभावित करता है।

ऐसे गाँवों में चुनावी चर्चा केवल पारंपरिक जातीय समीकरणों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि विकास, शिक्षा, रोजगार, सड़क, पेयजल, सार्वजनिक सुविधाओं और पंचायत के कामकाज जैसे मुद्दे भी चर्चा का हिस्सा बनते हैं।

3. पंचायती राज व्यवस्था और संवैधानिक आधार

भारत में पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक मान्यता प्रदान करने के लिए 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 महत्वपूर्ण रहा। यह संशोधन 24 अप्रैल 1993 से प्रभावी हुआ। इसके माध्यम से संविधान में भाग-9 जोड़ा गया तथा पंचायतों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया।

इस संशोधन का उद्देश्य ग्रामीण स्तर पर लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण, जनभागीदारी, सामाजिक न्याय और स्थानीय स्वशासन को मजबूत करना था। 73वें संविधान संशोधन के प्रमुख प्रावधानों में निम्न शामिल हैं—

1. ग्राम सभा को संवैधानिक आधार प्रदान करना।
2. ग्राम पंचायतों तथा अन्य पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव नियमित रूप से कराना।
3. पंचायतों का पाँच वर्ष का कार्यकाल निर्धारित करना।
4. अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था।
5. महिलाओं के लिए कम-से-कम एक-तिहाई आरक्षण का प्रावधान।

©IJRASET: All Rights are Reserved

6. राज्य निर्वाचन आयोग की स्थापना।
7. राज्य वित्त आयोग की व्यवस्था।
8. पंचायतों को स्थानीय विकास संबंधी जिम्मेदारियाँ प्रदान करना।

राजस्थान में पंचायती राज संस्थाओं का ऐतिहासिक महत्व भी विशेष रहा है। राज्य में पंचायती राज व्यवस्था के विकास ने ग्रामीण नेतृत्व को संस्थागत आधार प्रदान किया। ग्राम पंचायत चुनावों ने ऐसे अनेक स्थानीय नेताओं को सामने आने का अवसर दिया, जिनकी राजनीतिक पहचान राष्ट्रीय या राज्य स्तर की राजनीति के बजाय स्थानीय सामाजिक कार्यों से बनी।

4. शोध समस्या

ग्राम पंचायत चुनावों को सामान्यतः स्थानीय प्रतिनिधि चुनने की प्रक्रिया माना जाता है, लेकिन इनके पीछे सामाजिक और राजनीतिक कारकों का जटिल संबंध कार्य करता है।

नूनिया गोठड़ा के वर्ष 2026 के सरपंच चुनाव में कई ऐसे कारक दिखाई देते हैं जिनका विश्लेषण आवश्यक है। इनमें प्रमुख हैं—

- जातीय एवं सामुदायिक समीकरण।
- प्रत्याशियों के पारिवारिक और सामाजिक संबंध।
- पूर्व सरपंचों और उनके परिवारों का स्थानीय प्रभाव।
- आर्थिक एवं सामाजिक सहयोग के माध्यम से निर्मित प्रतिष्ठा।
- युवा मतदाताओं और स्थानीय युवा समूहों की सक्रियता।
- गाँव से बाहर रहने वाले मतदाताओं की चुनावी भागीदारी।
- मतदान केंद्र पर प्रभावी प्रबंधन।
- पंचायत समिति चुनाव और ग्राम पंचायत चुनाव के बीच राजनीतिक संबंध।

इस अध्ययन की मूल समस्या यह समझना है कि नूनिया गोठड़ा में वर्ष 2026 के सरपंच चुनाव का परिणाम किन सामाजिक, राजनीतिक और संगठनात्मक कारकों से प्रभावित हुआ तथा स्थानीय जनमत निर्माण में इन कारकों की क्या भूमिका रही।

5. अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. नूनिया गोठड़ा की सामाजिक एवं राजनीतिक संरचना का अध्ययन करना।
2. वर्ष 2026 के सरपंच चुनाव के परिणामों का विश्लेषण करना।
3. जातीय समीकरणों और पारिवारिक संबंधों की भूमिका को समझना।
4. प्रत्याशियों के सामाजिक संपर्क और स्थानीय प्रतिष्ठा का अध्ययन करना।
5. युवा मतदाताओं और युवा समूहों की भूमिका का विश्लेषण करना।
6. पंचायत समिति चुनाव और सरपंच चुनाव के बीच संभावित राजनीतिक संबंधों का अध्ययन करना।
7. गाँव से बाहर रहने वाले मतदाताओं की मतदान प्रक्रिया में भागीदारी को समझना।
8. बूथ प्रबंधन और चुनावी संगठन की भूमिका का अध्ययन करना।
9. ग्रामीण लोकतंत्र में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का विश्लेषण करना।
10. स्थानीय जनमत निर्माण की प्रक्रिया को समझना।

6. शोध प्रश्न

इस अध्ययन में निम्नलिखित प्रश्नों के माध्यम से चुनावी प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया गया है—

1. नूनिया गोठड़ा में जातीय संरचना का सरपंच चुनाव पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है?
2. क्या प्रत्याशी के पारिवारिक संबंध और सामाजिक प्रतिष्ठा चुनावी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं?
3. क्या आर्थिक और सामाजिक सहयोग से निर्मित व्यक्तिगत संबंध मतदाताओं के निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं?
4. युवा मतदाताओं की भूमिका वर्ष 2026 के चुनाव में कितनी महत्वपूर्ण रही?

©IJRASET: All Rights are Reserved

5. 28 अक्टूबर 2026 के पंचायत समिति चुनाव का सरपंच चुनाव के राजनीतिक वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ा?
6. गाँव से बाहर रहने वाले मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करना चुनावी रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा कैसे बना?
7. क्या बूथ प्रबंधन चुनावी परिणाम को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण संगठनात्मक कारक रहा?
8. क्या ग्रामीण चुनावों में पारंपरिक सामाजिक समीकरणों के साथ नए राजनीतिक समीकरण भी विकसित हो रहे हैं?

7. परिकल्पनाएँ

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रारंभिक परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं—

परिकल्पना 1: ग्रामीण क्षेत्रों में जातीय संरचना चुनावी जनमत निर्माण को प्रभावित करती है, लेकिन चुनाव परिणाम केवल जातीय संख्या से निर्धारित नहीं होते।

परिकल्पना 2: प्रत्याशी और उसके परिवार के सामाजिक संबंध तथा स्थानीय प्रतिष्ठा चुनावी समर्थन को प्रभावित कर सकते हैं।

परिकल्पना 3: युवा मतदाताओं की सक्रियता ग्रामीण चुनावों में नए राजनीतिक समीकरणों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

परिकल्पना 4: प्रभावी बूथ प्रबंधन और मतदाताओं से संपर्क चुनावी सफलता में सहायक हो सकते हैं।

परिकल्पना 5: पंचायत समिति तथा ग्राम पंचायत चुनावों के बीच स्थानीय राजनीतिक नेटवर्क और समर्थन समूहों के कारण संबंध विकसित हो सकता है।

इन परिकल्पनाओं का परीक्षण उपलब्ध परिणामों और स्थानीय सूचनाओं के आधार पर प्रारंभिक रूप में किया गया है। इनके सांख्यिकीय परीक्षण के लिए विस्तृत मतदाता सर्वेक्षण की आवश्यकता होगी।

8. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन का स्वरूप अनुभवमूलक एवं वर्णनात्मक है। इसमें गुणात्मक तथा उपलब्ध सीमित मात्रात्मक सूचनाओं का उपयोग किया गया है।

8.1 प्राथमिक स्रोत

- ग्राम पंचायत द्वारा उपलब्ध चुनाव परिणाम।
- गाँव के सामाजिक एवं राजनीतिक घटनाक्रम से संबंधित सूचनाएँ।
- स्थानीय निवासियों से प्राप्त विवरण।
- चुनाव में प्रत्याशियों और उनके समर्थकों की भूमिका से संबंधित क्षेत्रीय जानकारी।
- 28 अक्टूबर 2026 के पंचायत समिति चुनाव से संबंधित उपलब्ध स्थानीय विवरण।

8.2 द्वितीयक स्रोत

- भारतीय संविधान का 73वाँ संशोधन।
- पंचायती राज व्यवस्था से संबंधित पुस्तकें एवं सरकारी दस्तावेज।
- राजस्थान पंचायती राज अधिनियम एवं संबंधित नियम।
- चुनाव और ग्रामीण राजनीतिक भागीदारी पर प्रकाशित शोध-पत्र।
- ग्रामीण समाज, जाति और स्थानीय नेतृत्व से संबंधित अकादमिक साहित्य।

8.3 अध्ययन की सीमाएँ

इस अध्ययन में उपलब्ध कराए गए स्थानीय विवरण विस्तृत मतदाता सर्वेक्षण, आधिकारिक नामांकन दस्तावेज, बूथवार मतदान आँकड़े तथा प्रत्याशियों के साक्षात्कार का उपयोग किया गया है। इसलिए अध्ययन को प्रारंभिक अनुभवमूलक विश्लेषण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

©IJRASET: All Rights are Reserved

9. वर्ष 2026 का नूनिया गोठड़ा सरपंच चुनाव: परिणाम एवं विश्लेषण

नूनिया गोठड़ा में वर्ष 2026 का सरपंच चुनाव स्थानीय राजनीति की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। इस चुनाव में कुल छः प्रत्याशियों ने भाग लिया। आधिकारिक परिणाम के अनुसार चुनाव में कुल 2497 मत दर्ज किए गए।

9.1 चुनाव परिणाम

क्रम	प्रत्याशी का नाम	प्राप्त मत
1	विनोद जाखड़	1386
2	मंजू देवी (पत्नी अमर सिंह)	1087
3	दर्शनाबाई	8
4	कविता	6
5	मंजू	5
6	सरिता	1
7	NOTA	4
कुल		2497

स्रोत: शोधकर्ता को उपलब्ध कराया गया ग्राम पंचायत द्वारा चुनाव परिणाम।

9.2 मतों का प्रतिशत

कुल 2497 मतों के आधार पर प्रमुख प्रत्याशियों के मतों का प्रतिशत निम्न प्रकार है—

प्रत्याशी	मत	प्रतिशत
विनोद जाखड़	1386	55.51%
मंजू देवी	1087	43.53%
दर्शनाबाई	8	0.32%
कविता	6	0.24%
मंजू	5	0.20%
सरिता	1	0.04%
NOTA	4	0.16%

विनोद जाखड़ को कुल मतों का लगभग 55.51 प्रतिशत प्राप्त हुआ, जबकि मंजू देवी को लगभग 43.53 प्रतिशत मत मिले। दोनों प्रत्याशियों के बीच मतों का अंतर 299 रहा।

9.3 चुनाव परिणाम का राजनीतिक महत्व

विनोद जाखड़ की जीत का अंतर 299 मत रहा। यह अंतर दर्शाता है कि चुनाव में प्रतिस्पर्धा मुख्यतः दो प्रत्याशियों के बीच केंद्रित रही। अन्य प्रत्याशियों को बहुत कम मत मिले।

इस परिणाम से यह संकेत मिलता है कि स्थानीय चुनावों में अनेक नामांकन या प्रत्याशियों की उपस्थिति के बावजूद मतदाताओं का बड़ा हिस्सा दो प्रमुख राजनीतिक विकल्पों के आसपास संगठित हो सकता है।

हालाँकि केवल परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि किस प्रत्याशी को किस जाति, परिवार या समूह के कितने मत मिले। इसके लिए बूथवार आँकड़ों और मतदाताओं के साक्षात्कार की आवश्यकता होगी।

10. प्रत्याशी का पारिवारिक प्रभाव और सामाजिक पूँजी

ग्रामीण राजनीति में प्रत्याशी की व्यक्तिगत पहचान के साथ उसके परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। गाँव में लंबे समय से स्थापित पारिवारिक संबंध, सामाजिक सहयोग और स्थानीय लोगों के साथ नियमित संपर्क चुनावी वातावरण को प्रभावित करते हैं।

©IJRASET: All Rights are Reserved

नूनिया गोठड़ा के वर्ष 2026 के चुनाव में विनोद जाखड़ के परिवार की सामाजिक भूमिका विशेष चर्चा का विषय रही। स्थानीय विवरण के अनुसार उनके पति कुलदीप नूनिया ने गाँव के विभिन्न परिवारों के साथ सामाजिक संबंध बनाए रखे। विवाह, मकान निर्माण और बीमारी जैसी परिस्थितियों में लोगों की सहायता करना इन संबंधों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बताया गया है। ग्रामीण समाज में ऐसे सहयोग को केवल आर्थिक लेन-देन के रूप में नहीं देखा जाता। यह सामाजिक विश्वास, पारस्परिकता और व्यक्तिगत संबंधों का निर्माण भी कर सकता है।समाजशास्त्रीय दृष्टि से इसे सामाजिक पूँजी की अवधारणा से समझा जा सकता है। सामाजिक पूँजी का अर्थ उन संबंधों, विश्वास और सहयोग के नेटवर्क से है जो व्यक्तियों तथा समूहों को एक-दूसरे से जोड़ते हैं। इस चुनाव में कुलदीप नूनिया की सामाजिक सक्रियता ने विनोद जाखड़ के पक्ष में अनुकूल वातावरण बनाने में योगदान दिया हो सकता है। हालांकि यह स्थापित करने के लिए मतदाता सर्वेक्षण आवश्यक है कि सहायता प्राप्त करने वाले परिवारों ने वास्तव में किस प्रत्याशी को वोट दिया।

10.1 पूर्व सरपंच परिवार का प्रभाव

ग्राम पंचायत द्वारा जानकारी के अनुसार विनोद जाखड़ के परिवार की सदस्य सुमित्रा देवी और उनके ससुर श्री रिशाल सिंह पूर्व में सरपंच रह चुके हैं। इससे परिवार को पंचायत व्यवस्था और गाँव के राजनीतिक-सामाजिक संबंधों का अनुभव प्राप्त रहा ।

पूर्व सरपंच परिवार के पास सामान्यतः स्थानीय समस्याओं, प्रशासनिक प्रक्रियाओं, सरकारी योजनाओं और ग्रामीण संपर्कों का अनुभव है। यह अनुभव चुनावी संगठन और जनसंपर्क में उपयोगी साबित रहा ।विनोद जाखड़ के परिवार के सदस्य पूर्व सरपंच सुमित्रा सिंह के पुत्र विकास की भूमिका का भी उल्लेख स्थानीय विवरण में मिलता है।

11. पिछले एवं वर्तमान पंचायत समिति चुनाव में कुनबा आधारित राजनीति, मत विभाजन एवं राजनीतिक ध्रुवीकरण का प्रभाव

वर्ष 2026 के सरपंच चुनाव में मंजू देवी पत्नी अमर सिंह प्रमुख प्रतिद्वंद्वी प्रत्याशी के रूप में सामने आईं। स्थानीय विवरण के अनुसार अमर सिंह पूर्व में अथवा चुनाव से पहले ग्राम पंचायत के सरपंच पद पर रहे थे। इस कारण उनके परिवार को भी पंचायत स्तर पर राजनीतिक अनुभव और स्थानीय पहचान प्राप्त थी।इस चुनावी घटनाक्रम को शोधपत्र में केवल दो प्रत्याशियों की हार-जीत के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। इसके माध्यम से ग्रामीण स्थानीय राजनीति में कुनबा आधारित मतदान, पारिवारिक प्रतिस्पर्धा, मतों का विभाजन, प्रत्याशियों के बीच राजनीतिक गठजोड़ तथा सामाजिक एकजुटता जैसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं का विश्लेषण किया जा सकता है।

नूनिया गोठड़ा क्षेत्र के पंचायत समिति चुनावों का विश्लेषण करने पर यह तथ्य सामने आता है कि स्थानीय चुनावों में प्रत्याशियों की व्यक्तिगत लोकप्रियता के साथ-साथ पारिवारिक संबंध, कुनबे की एकजुटता तथा सामाजिक-राजनीतिक समीकरण भी चुनावी परिणामों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। पिछले पंचायत समिति चुनाव में मुकाबला त्रिकोणीय स्वरूप का था। अमरसिंह के पारिवारिक कुनबे के सदस्यों की संख्या 110 के आस पास है जो सुमित्रा देवी और पितृपाल के कुनबे की संख्या से काफी कम है । लेकिन अमरसिंह को अन्य समुदाय में अच्छा जन समर्थन था । इस चुनाव में सुमित्रा देवी और अमर सिंह के बीच मुख्य प्रतिस्पर्धा थी, जबकि पितृपाल नूनिया तीसरे प्रत्याशी के रूप में चुनाव मैदान में थे। उल्लेखनीय है कि पितृपाल नूनिया का संबंध सुमित्रा देवी के ही कुनबे से था। इस कारण एक ही पारिवारिक एवं सामाजिक समूह से जुड़े मतदाताओं के सामने एक से अधिक विकल्प उपलब्ध हो गए, जिसके परिणामस्वरूप मतों का विभाजन हुआ। पिछले चुनाव में सुमित्रा देवी को अमर सिंह के हाथों मात्र 135 मतों के अंतर से पराजय का सामना करना पड़ा। यह बहुत कम अंतर स्थानीय चुनावों में मतों के विभाजन के महत्त्व को रेखांकित करता है। राजनीतिक दृष्टि से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि एक ही कुनबे से संबंधित दोनों प्रत्याशियों के बीच चुनावी प्रतिस्पर्धा नहीं होती अथवा उनके समर्थकों के मत एक ही प्रत्याशी के पक्ष में केंद्रित होते, तो चुनाव परिणाम अलग भी हो सकता था। हालांकि, उपलब्ध जानकारी के आधार पर यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि पितृपाल नूनिया को प्राप्त सभी मत सुमित्रा देवी के संभावित मतदाता थे, लेकिन उनका एक ही कुनबे से होना चुनावी समीकरणों को प्रभावित करने वाला महत्त्वपूर्ण कारक अवश्य था। इस प्रकार त्रिकोणीय मुकाबले ने अमर सिंह के लिए अपेक्षाकृत अनुकूल राजनीतिक परिस्थिति निर्मित की।

अमर सिंह परिवार पूर्व में सरपंच पद पर रह चुका था, इसलिए चुनाव में उसके सामने पूर्व कार्यकाल से जुड़ी अपेक्षाओं और संभावित असंतोष की चुनौती मौजूद थी। इसके विपरीत, कुलदीप की पत्नी पहली बार चुनाव मैदान में उतरी थीं। उनके पक्ष में एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे पूर्व में किसी निर्वाचित पद पर नहीं रही थीं, जिसके कारण उन्हें पूर्ववर्ती कार्यकाल की विफलताओं, अधूरे विकास कार्यों अथवा स्थानीय स्तर पर उत्पन्न असंतोष का सामना नहीं करना पड़ रहा था। इस स्थिति में मतदाताओं के बीच उनके प्रति एक नई उम्मीद और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ। लोगों को उनसे यह आशा थी कि एक नए जनप्रतिनिधि के रूप में वे गांव की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझेंगी तथा विकास कार्यों को नई दिशा प्रदान करेंगी। इस प्रकार, जहां अमर सिंह परिवार को पूर्व कार्यकाल के कारण संभावित सत्ता-विरोधी भावना का सामना करना पड़ सकता था, वहीं कुलदीप की पत्नी को नए प्रत्याशी होने का लाभ मिला। चुनावी दृष्टि से यह अंतर मतदाताओं के निर्णय और दोनों प्रत्याशियों के प्रति

बनी धारणा को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक था।
इसके विपरीत, वर्तमान चुनाव में राजनीतिक परिस्थितियों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला। इस बार मुकाबला विनोद जाखड़ और मंजू (अमर सिंह) के बीच सीधा रहा। पिछले चुनाव में तीसरे प्रत्याशी के रूप में मैदान में रहे पितृपाल नूनिया ने इस बार विनोद जाखड़ का समर्थन किया। यह घटनाक्रम स्थानीय राजनीति में बदलते राजनीतिक संबंधों और चुनावी रणनीतियों को प्रदर्शित करता है। पिछले चुनाव में जिस कुनबे के भीतर प्रत्याशियों की प्रतिस्पर्धा के कारण मतों का विभाजन हुआ था, वर्तमान चुनाव में उसी कुनबे से जुड़े एक प्रमुख व्यक्ति का समर्थन दूसरे प्रत्याशी को प्राप्त हुआ। इस परिवर्तन ने चुनावी प्रतिस्पर्धा को नया स्वरूप प्रदान किया।
इस पूरे घटनाक्रम से यह समझने में सहायता मिलती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में चुनावी व्यवहार हमेशा केवल राजनीतिक दलों की विचारधारा अथवा विकास संबंधी मुद्दों से निर्धारित नहीं होता। कई बार व्यक्तिगत संबंध, पारिवारिक प्रतिष्ठा, आपसी प्रतिस्पर्धा, सामाजिक पहचान और स्थानीय नेतृत्व के प्रति विश्वास भी मतदाताओं के निर्णय को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से पंचायत समिति जैसे स्थानीय निकायों के चुनावों में प्रत्याशी का व्यक्तिगत संपर्क, परिवार एवं कुनबे का समर्थन और गांव के सामाजिक नेटवर्क चुनावी सफलता के महत्त्वपूर्ण आधार बन सकते हैं।
इस प्रकार पिछले और वर्तमान चुनावों की तुलना से यह निष्कर्ष निकलता है कि नूनिया गोठड़ा की स्थानीय राजनीति में मत विभाजन से मतों के एकीकरण की ओर परिवर्तन देखने को मिला। पिछले चुनाव में पारिवारिक प्रतिस्पर्धा ने त्रिकोणीय मुकाबले को जन्म दिया, जबकि वर्तमान चुनाव में राजनीतिक समर्थन के पुनर्संयोजन ने मुकाबले को मुख्यतः दो प्रत्याशियों के बीच केंद्रित कर दिया। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि स्थानीय लोकतंत्र में चुनावी परिणाम केवल प्रत्याशियों की संख्या से नहीं, बल्कि उनके पारस्परिक संबंधों, समर्थन आधार और मतदाताओं के सामूहिक व्यवहार से भी प्रभावित होते हैं।
इस चुनाव में एक ओर पूर्व पंचायत नेतृत्व से जुड़ा परिवार था, जबकि दूसरी ओर विनोद जाखड़ का परिवार अपने सामाजिक संपर्कों और स्थानीय सहयोग के आधार पर चुनावी समर्थन जुटा रहा था।
इस प्रकार चुनाव को केवल दो प्रत्याशियों के बीच प्रतिस्पर्धा के रूप में नहीं, बल्कि स्थानीय नेतृत्व की दो अलग-अलग सामाजिक एवं राजनीतिक संरचनाओं के बीच प्रतिस्पर्धा के रूप में भी देखा जा सकता है।
यहाँ यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि किसी परिवार का पूर्व में पंचायत नेतृत्व में होना अपने आप में चुनावी जीत की गारंटी नहीं देता। मतदाता वर्तमान परिस्थितियों, प्रत्याशी की छवि, स्थानीय अपेक्षाओं और पिछले कार्यों के आधार पर अपना निर्णय ले सकते हैं।

12. जातीय समीकरण और ग्रामीण जनमत

भारतीय ग्रामीण समाज में जाति एक महत्वपूर्ण सामाजिक संरचना रही है। पंचायत चुनावों में जातीय पहचान कई बार राजनीतिक लामबंदी, प्रत्याशी चयन और मतदाता संपर्क का आधार बनती है।
नूनिया गोठड़ा में जाट समुदाय की संख्या स्थानीय अनुमान के अनुसार अधिक है। इसके अतिरिक्त गोस्वामी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, कुमावत, ब्राह्मण, सांसी, मनियार और नाई समुदायों की भी उपस्थिति है।
ऐसी स्थिति में चुनावी रणनीति बनाते समय प्रत्याशी और उनके समर्थक विभिन्न समुदायों के साथ संपर्क स्थापित करने का प्रयास करते हैं। लेकिन जातीय बहुलता को सीधे चुनावी समर्थन के बराबर नहीं माना जा सकता।
एक ही समुदाय के भीतर पारिवारिक प्रतिस्पर्धा, व्यक्तिगत संबंध, राजनीतिक विचार, स्थानीय विवाद और प्रत्याशी के प्रति विश्वास के कारण मत विभाजित हो सकते हैं।

12.1 जाति और परिवार का संबंध

ग्रामीण क्षेत्रों में जातीय पहचान के साथ परिवार और कुनबे की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। एक ही जाति के अलग-अलग परिवारों के राजनीतिक हित अलग हो सकते हैं। चुनाव के समय परिवारों के बीच प्रतिस्पर्धा और समर्थन के विभिन्न समूह विकसित हो सकते हैं।
इस प्रकार जाति चुनावी राजनीति का एक आधार अवश्य है, लेकिन परिवार, रिश्तेदारी और व्यक्तिगत संपर्क उसके भीतर अलग-अलग राजनीतिक धाराएँ निर्मित कर सकते हैं।

12.2 छोटे समुदायों की भूमिका

गाँव में संख्या की दृष्टि से छोटे समुदाय भी चुनावी प्रक्रिया का हिस्सा होते हैं। कई बार उनके मत किसी प्रत्याशी के पक्ष में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं, विशेषकर जब दो प्रमुख प्रत्याशियों के बीच मुकाबला निकट हो।
इसलिए ग्रामीण लोकतंत्र में सभी समुदायों की राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व महत्वपूर्ण है। छोटे समुदायों की राजनीतिक आवाज को समझने के लिए समूह-आधारित साक्षात्कार और मतदाता सर्वेक्षण उपयोगी होंगे।

13. युवा मतदाताओं की भूमिका

वर्ष 2026 के नूनिया गोठड़ा चुनाव का एक महत्वपूर्ण पक्ष युवाओं की सक्रियता है। ग्रामीण समाज में नई पीढ़ी की राजनीतिक भागीदारी अब केवल पारंपरिक पारिवारिक प्रभाव तक सीमित नहीं है। युवा मतदाता सोशल मीडिया, मोबाइल संचार, मित्र समूहों और व्यक्तिगत संपर्कों के माध्यम से चुनावी विमर्श को प्रभावित कर सकते हैं।

स्थानीय विवरण के अनुसार 28 अक्टूबर 2026 को हुए पंचायत समिति चुनाव में भाजपा प्रत्याशी जयसिंह नूनिया के समर्थन में से जुड़े युवाओं अथवा स्थानीय युवा समूह की सक्रियता रही। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस समूह से जुड़े युवाओं का समर्थन पंचायत समिति चुनाव के साथ-साथ ग्राम पंचायत के सरपंच चुनाव के राजनीतिक वातावरण में भी दिखाई दिया।

13.1 युवा समूहों का राजनीतिक प्रभाव

युवा समूह चुनावों में निम्नलिखित माध्यमों से प्रभाव डाल सकते हैं—

1. प्रत्याशियों के समर्थन में जनसंपर्क।
2. गाँव के युवाओं के बीच राजनीतिक चर्चा।
3. सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यमों का उपयोग।
4. गाँव से बाहर रहने वाले युवाओं से संपर्क।
5. मतदान के प्रति जागरूकता।
6. चुनावी सभाओं और बैठकों में भागीदारी।
7. नए राजनीतिक नेतृत्व को समर्थन।

नूनिया गोठड़ा में युवा समूहों की भूमिका इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि पंचायत समिति और ग्राम पंचायत चुनावों के बीच एक साझा राजनीतिक वातावरण निर्मित हो सकता है।

हालाँकि यह मानना उचित नहीं होगा कि पंचायत समिति चुनाव में किसी प्रत्याशी के समर्थन में सक्रिय सभी युवा स्वतः सरपंच चुनाव में भी उसी पक्ष के समर्थक रहे होंगे। इस संबंध की पुष्टि के लिए युवाओं और मतदाताओं के साक्षात्कार आवश्यक हैं।

14. सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारियों और सामाजिक नेतृत्व की भूमिका

झुंझुनू जिला सेना में योगदान के लिए विशेष पहचान रखता है। यहाँ सैन्य सेवा से जुड़े व्यक्तियों का सामाजिक जीवन में सम्मान और प्रभाव देखा जाता है।

नूनिया गोठड़ा के चुनावी घटनाक्रम में सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारियों की भूमिका का भी उल्लेख प्राप्त हुआ है। स्थानीय विवरण के अनुसार सेवानिवृत्त सेना सूबेदार मलिराम तथा एक कैप्टन ताराचंद की भूमिका चुनावी सामाजिक वातावरण में महत्वपूर्ण रही।

सैन्य पृष्ठभूमि से जुड़े व्यक्तियों में अनुशासन, संगठन, नेतृत्व और सामुदायिक संपर्क का अनुभव हो सकता है। ग्रामीण समाज में उनकी प्रतिष्ठा स्थानीय स्तर पर सामाजिक संवाद और जनमत निर्माण को प्रभावित कर सकती है।

इस अध्ययन में इन व्यक्तियों की भूमिका को स्थानीय सामाजिक प्रभाव और भागीदारी के संदर्भ में देखा गया है। उनके द्वारा किस प्रकार का प्रत्यक्ष चुनावी कार्य किया गया ।

15. 28 अक्टूबर 2026 का पंचायत समिति चुनाव और सरपंच चुनाव से संबंध

नूनिया गोठड़ा में 28 अक्टूबर 2026 को हुए पंचायत समिति चुनाव का स्थानीय राजनीतिक वातावरण पर प्रभाव अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार पंचायत समिति चुनाव में भाजपा प्रत्याशी जयसिंह नूनिया के समर्थन में स्थानीय युवा समूह और कुछ सामाजिक प्रभावशाली व्यक्तियों की सक्रियता रही। इस राजनीतिक गतिविधि ने गाँव में चुनावी संपर्कों और विभिन्न समूहों के बीच संवाद को बढ़ाया।

पंचायत समिति चुनाव और ग्राम पंचायत चुनाव प्रशासनिक रूप से अलग-अलग चुनाव हैं, लेकिन ग्रामीण स्तर पर इनके राजनीतिक नेटवर्क कई बार एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। एक चुनाव में सक्रिय हुए युवा, सामाजिक समूह और स्थानीय कार्यकर्ता दूसरे चुनाव में भी संपर्क और संगठन की भूमिका निभा सकते हैं।

©IJRASET: All Rights are Reserved

15.1 चुनावी समर्थन का विस्तार

पंचायत समिति चुनाव के दौरान विकसित सामाजिक संपर्क और राजनीतिक सक्रियता का उपयोग ग्राम पंचायत चुनाव के दौरान भी किया गया हो सकता है। स्थानीय विवरण में यह संकेत मिलता है कि जयसिंह नूनिया के समर्थन में सक्रिय कुछ युवा समूहों का विनोद जाखड़ के सरपंच चुनाव में भी समर्थन दिखाई दिया।

यह स्थिति ग्रामीण राजनीति में राजनीतिक नेटवर्क के विस्तार का उदाहरण हो सकती है। इसमें एक चुनाव के दौरान निर्मित संपर्क दूसरे चुनाव के लिए संगठनात्मक आधार प्रदान कर सकते हैं।

15.2 स्थानीय नेतृत्व और राजनीतिक समन्वय

ग्रामीण चुनावों में स्थानीय नेता, सामाजिक कार्यकर्ता, युवा समूह, पूर्व प्रतिनिधि और प्रभावशाली परिवार कई बार विभिन्न स्तरों के चुनावों में समन्वय स्थापित करते हैं।

इस प्रकार ग्राम पंचायत और पंचायत समिति चुनावों के बीच संबंध केवल दलगत राजनीति से निर्धारित नहीं होता, बल्कि स्थानीय व्यक्तिगत संबंध और सामुदायिक नेटवर्क भी महत्वपूर्ण होते हैं।

यह अध्ययन इस बात की ओर संकेत करता है कि नूनिया गोठड़ा में पंचायत समिति चुनाव और सरपंच चुनाव के बीच स्थानीय स्तर पर राजनीतिक संपर्कों की निरंतरता दिखाई दी।

16. बूथ प्रबंधन और मतदाता संपर्क की भूमिका

चुनाव में प्रत्याशी की लोकप्रियता के साथ-साथ मतदान के दिन संगठनात्मक तैयारी भी महत्वपूर्ण होती है। ग्रामीण चुनावों में बूथ प्रबंधन का अर्थ केवल मतदान केंद्र पर एजेंट नियुक्त करना नहीं है, बल्कि मतदाताओं की पहचान, मतदान के प्रति जागरूकता, संपर्क व्यवस्था और मतदान दिवस की समन्वित तैयारी भी है।

नूनिया गोठड़ा के वर्ष 2026 के चुनाव में विनोद जाखड़ के पक्ष में बूथ प्रबंधन को महत्वपूर्ण कारक बताया गया है।

स्थानीय विवरण के अनुसार उनके समर्थकों ने गाँव से बाहर रहने वाले मतदाताओं की पहचान की तथा उनसे संपर्क कर मतदान के दिन गाँव आने के लिए प्रेरित किया। मतदान केंद्रों पर ऐसे व्यक्तियों को एजेंट बनाया गया जिन्हें गाँव के मतदाताओं और परिवारों की जानकारी थी।

16.1 गाँव से बाहर रहने वाले मतदाताओं की भूमिका

नूनिया गोठड़ा के अनेक निवासी शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय और सैन्य सेवा के कारण गाँव से बाहर रहते हैं। चुनाव के दौरान इन मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करना प्रत्याशियों के लिए महत्वपूर्ण संगठनात्मक कार्य हो सकता है।

ऐसे मतदाताओं की भागीदारी से चुनाव में मतों का वितरण प्रभावित हो सकता है। इसलिए स्थानीय चुनावों में केवल गाँव में रहने वाले मतदाताओं से संपर्क पर्याप्त नहीं होता; प्रवासी मतदाताओं से भी संपर्क स्थापित करना आवश्यक हो सकता है।

16.2 बूथ एजेंटों की भूमिका

बूथ एजेंट मतदान प्रक्रिया में प्रत्याशी के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं। स्थानीय मतदाताओं की जानकारी रखने वाले व्यक्तियों की नियुक्ति से मतदान संबंधी समन्वय में सुविधा हो सकती है।

इस चुनाव में स्थानीय विवरण के अनुसार विनोद जाखड़ के समर्थकों ने ऐसे व्यक्तियों को बूथ एजेंट बनाया जिन्हें गाँव के परिवारों और मतदाताओं की पहचान थी।

इससे यह समझा जा सकता है कि ग्रामीण चुनावों में स्थानीय सामाजिक जानकारी और संगठनात्मक क्षमता का महत्व अधिक होता है।

16.3 बूथ प्रबंधन का अकादमिक महत्व

बूथ प्रबंधन को चुनावी राजनीति में संगठनात्मक पूँजी के रूप में समझा जा सकता है। इसमें मतदाताओं से संपर्क, मतदान संबंधी जानकारी, एजेंटों की नियुक्ति और मतदान दिवस पर समन्वय शामिल होता है।

हालाँकि केवल बूथ प्रबंधन को जीत का एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता। इसे अन्य सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत कारकों के साथ मिलाकर देखना आवश्यक है।

17. चुनाव में धनबल, शराब और बाहुबल के आरोप

ग्रामीण चुनावों में कई बार धनबल, शराब वितरण और बाहुबल के उपयोग के आरोप सामने आते हैं। नूनिया गोठड़ा के वर्ष 2026 के चुनाव के संबंध में स्थानीय विवरण में दोनों प्रमुख पक्षों द्वारा शराब, धन और बाहुबल के उपयोग की चर्चा की गई है।

17.1 चुनावी नैतिकता

लोकतांत्रिक चुनाव का उद्देश्य मतदाता को स्वतंत्र और निष्पक्ष वातावरण में अपना प्रतिनिधि चुनने का अवसर प्रदान करना है। धनबल, शराब या धमकी जैसे साधनों का उपयोग यदि प्रमाणित होता है, तो यह मतदाता की स्वतंत्रता और चुनावी समानता को प्रभावित कर सकता है।

18. डमी प्रत्याशियों और वैकल्पिक नामांकन की स्थानीय चर्चा

स्थानीय विवरण के अनुसार वर्ष 2026 के चुनाव में दोनों प्रमुख पक्षों की ओर से संभावित वैकल्पिक प्रत्याशियों के नामांकन की चर्चा रही।
विनोद जाखड़ के पक्ष से दर्शनाबाई और मंजू के नाम तथा मंजू देवी-अमर सिंह पक्ष से कविता और सरिता के नामों का उल्लेख किया गया है।
स्थानीय स्तर पर इन्हें संभावित वैकल्पिक अथवा डमी प्रत्याशी बताया गया।
उपलब्ध परिणाम में इन प्रत्याशियों को बहुत कम मत मिले। लेकिन केवल कम मत मिलने के आधार पर यह प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि वे डमी प्रत्याशी थे।
इस दावे की पुष्टि के लिए नामांकन पत्र, नाम वापसी की स्थिति, प्रत्याशियों के बयान और चुनावी प्रक्रिया से जुड़े दस्तावेजों का अध्ययन आवश्यक होगा।

18.1 वैकल्पिक नामांकन का राजनीतिक महत्व

यदि किसी चुनाव में संभावित वैकल्पिक प्रत्याशी खड़े किए जाते हैं, तो इसके पीछे नामांकन प्रक्रिया, आरक्षण संबंधी अनिश्चितता या चुनावी रणनीति जैसे कारण हो सकते हैं। लेकिन प्रत्येक मामले में वास्तविक उद्देश्य की पुष्टि दस्तावेजों और संबंधित व्यक्तियों के साक्षात्कार से ही संभव है।
इसलिए इस अध्ययन में इसे स्थानीय राजनीतिक चर्चा के रूप में शामिल किया गया है।

19. महिला राजनीतिक भागीदारी और स्थानीय नेतृत्व

पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण ने ग्रामीण राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा दिया है। इससे महिलाओं को निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है।
नूनिया गोठड़ा में स्थानीय जानकारी के अनुसार पूर्व में दो बार महिला सरपंच निर्वाचित हुई हैं। विनोद जाखड़ के परिवार की सदस्य सुमित्रा देवी का पूर्व सरपंच होना इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है।
वर्ष 2026 के चुनाव में भी महिला प्रत्याशी मंजू देवी प्रमुख प्रतिस्पर्धी के रूप में सामने आईं। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण चुनावों में महिलाओं की राजनीतिक उपस्थिति महत्वपूर्ण है।
हालाँकि महिला प्रतिनिधित्व का अध्ययन केवल निर्वाचित महिला प्रत्याशियों की संख्या तक सीमित नहीं होना चाहिए। यह भी देखना आवश्यक है कि महिलाएँ चुनावी निर्णय, प्रचार, राजनीतिक रणनीति और पंचायत के प्रशासनिक कार्यों में कितनी स्वतंत्र भागीदारी करती हैं।

19.1 महिला नेतृत्व की चुनौतियाँ

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला प्रतिनिधियों के सामने कई चुनौतियाँ हो सकती हैं—

1. पारिवारिक हस्तक्षेप।
2. राजनीतिक निर्णय लेने में सीमित स्वतंत्रता।
3. सामाजिक रूढ़ियाँ।
4. प्रशासनिक जानकारी की कमी।
5. सार्वजनिक बैठकों में सीमित भागीदारी।
6. आर्थिक और सामाजिक निर्भरता।

इन चुनौतियों के बावजूद पंचायतों में महिला प्रतिनिधित्व ग्रामीण लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाता है।

©IJRASET: All Rights are Reserved

20. स्थानीय जनमत निर्माण में संचार माध्यमों की भूमिका

आज ग्रामीण चुनावों में संचार के पारंपरिक और आधुनिक दोनों माध्यम महत्वपूर्ण हो गए हैं। पहले चुनावी प्रचार का प्रमुख आधार व्यक्तिगत संपर्क, बैठकें, सार्वजनिक सभाएँ और मौखिक संवाद हुआ करता था। अब इनके साथ मोबाइल फोन, WhatsApp, Facebook, YouTube और अन्य डिजिटल माध्यम भी जुड़ गए हैं।

नूनिया गोठड़ा जैसे शिक्षित और रोजगार के कारण बाहरी क्षेत्रों से जुड़े गाँवों में डिजिटल संचार का महत्व और बढ़ जाता है।

20.1 व्यक्तिगत संपर्क

ग्राम पंचायत चुनावों में प्रत्याशी और मतदाता के बीच सीधा संपर्क अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। गाँव में परिवारों के साथ संबंध, सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी और व्यक्तिगत व्यवहार जनमत निर्माण को प्रभावित कर सकते हैं।

20.2 WhatsApp और सोशल मीडिया

WhatsApp समूहों और अन्य सोशल मीडिया मंचों के माध्यम से चुनाव संबंधी सूचनाएँ तेजी से प्रसारित हो सकती हैं। गाँव से बाहर रहने वाले लोग भी इन माध्यमों से चुनावी गतिविधियों से जुड़े रहते हैं।

20.3 मौखिक संवाद और सामाजिक नेटवर्क

ग्रामीण समाज में चौपाल, सामाजिक बैठक, विवाह समारोह, पारिवारिक संपर्क और मित्र समूह जनमत निर्माण के महत्वपूर्ण मंच हैं। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव के बावजूद प्रत्यक्ष संवाद का महत्व बना हुआ है।

20.4 संचार माध्यमों का दोहरा प्रभाव

संचार माध्यमों से मतदाताओं में जागरूकता बढ़ सकती है, लेकिन अपुष्ट सूचनाएँ, व्यक्तिगत आरोप और भ्रामक प्रचार चुनावी वातावरण को प्रभावित कर सकते हैं।

इसलिए ग्रामीण चुनावों में विश्वसनीय सूचना और जिम्मेदार राजनीतिक संवाद की आवश्यकता है।

21. परिणामों का समेकित विश्लेषण

नूनिया गोठड़ा के वर्ष 2026 के सरपंच चुनाव का अध्ययन अनेक महत्वपूर्ण बिंदुओं की ओर संकेत करता है।

1. पहला, चुनाव में दो प्रमुख प्रत्याशियों के बीच प्रतिस्पर्धा केंद्रित रही। विनोद जाखड़ को 1386 मत प्राप्त हुए जबकि मंजू देवी को 1087 मत मिले। 299 मतों का अंतर चुनाव में स्पष्ट बढ़त को दर्शाता है।
2. दूसरा, प्रत्याशी के परिवार और सामाजिक संपर्कों की भूमिका महत्वपूर्ण दिखाई देती है। कुलदीप नूनिया द्वारा विभिन्न सामाजिक अवसरों पर सहायता और संपर्क बनाए रखने की स्थानीय जानकारी सामाजिक पूँजी की अवधारणा से जुड़ती है।
3. तीसरा, पूर्व पंचायत नेतृत्व से जुड़े परिवारों की भूमिका ग्रामीण चुनावों में महत्वपूर्ण हो सकती है। सुमित्रा देवी का पूर्व सरपंच होना और अमर सिंह का पंचायत नेतृत्व से जुड़ा होना इस चुनाव की सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि को समझने में उपयोगी है।
4. चौथा, युवा समूहों की सक्रियता ने स्थानीय चुनावी वातावरण को प्रभावित करने की संभावना दिखाई। पंचायत समिति चुनाव में सक्रिय हुए समूहों के ग्राम पंचायत चुनाव से जुड़ने का विवरण ग्रामीण राजनीति में नेटवर्क की भूमिका को स्पष्ट करता है।
5. पाँचवाँ, गाँव से बाहर रहने वाले मतदाताओं से संपर्क और बूथ प्रबंधन चुनावी संगठन के महत्वपूर्ण पक्ष रहे। इससे पता चलता है कि आधुनिक ग्रामीण चुनावों में स्थानीय सामाजिक जानकारी के साथ संगठनात्मक तैयारी भी आवश्यक है।
6. छठा, चुनाव में धनबल, शराब और बाहुबल से जुड़े आरोप चुनावी नैतिकता के प्रश्न को सामने लाते हैं। इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि के बिना इन्हें निष्कर्ष के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।
7. सातवाँ, महिला प्रत्याशियों और पूर्व महिला नेतृत्व की उपस्थिति ग्रामीण लोकतंत्र में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को रेखांकित करती है।

22. प्रमुख निष्कर्ष

इस अध्ययन से निम्नलिखित प्रारंभिक निष्कर्ष सामने आते हैं—

1. नूनिया गोठड़ा का वर्ष 2026 का सरपंच चुनाव स्थानीय सामाजिक और राजनीतिक संबंधों की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा।
2. उपलब्ध हस्तलिखित परिणाम के अनुसार विनोद जाखड़ ने 1386 मत प्राप्त कर 299 मतों के अंतर से जीत दर्ज की।
3. मंजू देवी 1087 मतों के साथ प्रमुख प्रतिद्वंद्वी रहीं।
4. चुनाव में दो प्रमुख प्रत्याशियों के बीच मतों का बड़ा हिस्सा केंद्रित रहा।
5. स्थानीय सामाजिक संबंध और पारिवारिक प्रतिष्ठा चुनावी वातावरण को प्रभावित करने वाले संभावित कारक रहे।
6. कुलदीप नूनिया की सामाजिक सहायता और संपर्कों को विनोद जाखड़ के पक्ष में अनुकूल सामाजिक वातावरण के रूप में देखा जा सकता है।
7. पूर्व सरपंच परिवारों की सामाजिक और राजनीतिक पहचान चुनावी प्रतिस्पर्धा में महत्वपूर्ण रही।
8. पंचायत समिति चुनाव में सक्रिय युवा समूहों और सरपंच चुनाव के बीच स्थानीय राजनीतिक संपर्कों का संबंध दिखाई देता है।
9. सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारियों की सामाजिक प्रतिष्ठा और भागीदारी ग्रामीण राजनीतिक वातावरण में महत्वपूर्ण हो सकती है।
10. गाँव से बाहर रहने वाले मतदाताओं से संपर्क चुनावी रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा।
11. बूथ प्रबंधन और स्थानीय मतदाताओं की जानकारी रखने वाले एजेंटों की नियुक्ति को संगठनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा सकता है।
12. जातीय बहुलता चुनावी राजनीति का एक आधार हो सकती है, लेकिन केवल जातीय संख्या के आधार पर चुनाव परिणाम की व्याख्या नहीं की जा सकती।
13. महिला प्रतिनिधित्व ग्रामीण लोकतंत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
14. सोशल मीडिया और व्यक्तिगत संपर्क दोनों स्थानीय जनमत निर्माण में योगदान देते हैं।
15. चुनावी प्रक्रिया में धनबल, शराब और बाहुबल के आरोपों की निष्पक्ष जाँच तथा चुनावी नैतिकता का महत्व बना रहता है।
16. अजीतपुर गांव और अन्य समुदाय मुख्यत गोस्वामी जांगिड़ शामिल है जहां पूर्व सरपंच अमरसिंह के परिवार का प्रभाव बना हुआ है ।
17. त्रिकोणीय चुनावी मुकाबले के बजाय आमने- सामने (मुख्यता दो उम्मीदवार) की चुनावी प्रतिस्पर्धा अमरसिंह के परिवार के लिए अत्यधिक चुनौतीपूर्ण रही है ।

23. सुझाव

ग्रामीण लोकतंत्र को अधिक पारदर्शी, समावेशी और प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं—

1. मतदाता जागरूकता: ग्राम पंचायत स्तर पर मतदाताओं को स्वतंत्र और निष्पक्ष मतदान के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए।
2. चुनावी नैतिकता: धनबल, शराब और धमकी जैसी गतिविधियों पर प्रभावी निगरानी की जानी चाहिए।
3. युवा भागीदारी: युवाओं को चुनावी राजनीति में केवल प्रचार तक सीमित न रखकर ग्राम विकास और नीति निर्माण में भी भागीदारी देनी चाहिए।
4. महिला सशक्तीकरण: निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों को प्रशासनिक प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता और निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए।
5. सामाजिक समावेशन: सभी जातियों और समुदायों की पंचायत संबंधी निर्णयों में भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।
6. ग्राम सभा को मजबूत करना: ग्राम सभा की नियमित बैठकें आयोजित हों और उनमें विकास योजनाओं तथा बजट पर चर्चा की जाए।
7. डिजिटल पारदर्शिता: पंचायत के विकास कार्यों, खर्च और योजनाओं की जानकारी सार्वजनिक डिजिटल माध्यमों पर उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
8. प्रवासी मतदाताओं से संवाद: गाँव से बाहर रहने वाले नागरिकों को पंचायत के विकास और ग्राम सभा की गतिविधियों से जोड़ने के प्रयास किए जाने चाहिए।
9. चुनावी सर्वेक्षण: भविष्य में ग्राम पंचायत चुनावों का अध्ययन करने के लिए व्यवस्थित मतदाता सर्वेक्षण किया जाना चाहिए।
10. स्थानीय नेतृत्व का मूल्यांकन: पंचायत प्रतिनिधियों के कार्यों का मूल्यांकन जातीय या पारिवारिक पहचान के बजाय विकास, पारदर्शिता और जनसेवा के आधार पर होना चाहिए।

24. अध्ययन की सीमाएँ

प्रस्तुत शोध-पत्र एक प्रारंभिक अनुभवमूलक अध्ययन है। इसकी कुछ प्रमुख सीमाएँ हैं—

1. चुनाव परिणाम हस्तलिखित विवरण के आधार पर लिए गए हैं; आधिकारिक परिणाम पत्र से सत्यापन आवश्यक है।
2. गाँव की जातीय संरचना से संबंधित संख्याएँ स्थानीय अनुमान पर आधारित हैं।

3. सभी प्रत्याशियों और मतदाताओं के साक्षात्कार उपलब्ध नहीं हैं।
4. बूथवार मतदान आँकड़ों का विस्तृत विश्लेषण उपलब्ध नहीं है।
5. धनबल, शराब और बाहुबल से संबंधित आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है।
6. संभावित डमी प्रत्याशियों से संबंधित जानकारी का दस्तावेजी सत्यापन आवश्यक है।
7. पंचायत समिति चुनाव और सरपंच चुनाव के बीच समर्थन के संबंध को स्थापित करने के लिए अतिरिक्त साक्ष्य अपेक्षित हैं।

इसलिए इन निष्कर्षों को अंतिम या सार्वभौमिक निष्कर्ष न मानकर आगे के विस्तृत अनुसंधान का आधार माना जाना चाहिए।

25. उपसंहार

नूनिया गोठड़ा का वर्ष 2026 का सरपंच चुनाव ग्रामीण लोकतंत्र की जटिल सामाजिक एवं राजनीतिक प्रकृति को समझने का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस चुनाव में प्रत्याशियों की व्यक्तिगत पहचान, पारिवारिक संबंध, सामाजिक सहयोग, जातीय संरचना, युवा भागीदारी, स्थानीय नेतृत्व और बूथ प्रबंधन जैसे विभिन्न कारकों की भूमिका सामने आती है।

उपलब्ध परिणाम के अनुसार विनोद जाखड़ की जीत केवल एक चुनावी परिणाम नहीं है, बल्कि यह स्थानीय सामाजिक संबंधों और राजनीतिक संगठन के अध्ययन का अवसर भी प्रदान करती है। कुलदीप नूनिया के सामाजिक संपर्क, पूर्व सरपंच परिवार की पहचान, युवाओं की सक्रियता तथा गाँव से बाहर रहने वाले मतदाताओं से संपर्क जैसे पक्ष ग्रामीण राजनीति में सामाजिक पूँजी और संगठनात्मक क्षमता के महत्व को रेखांकित करते हैं।

28 अक्टूबर 2026 के पंचायत समिति चुनाव से संबंधित स्थानीय घटनाक्रम यह समझने में सहायता करता है कि ग्रामीण राजनीति में विभिन्न चुनावों के बीच सामाजिक और राजनीतिक नेटवर्क किस प्रकार कार्य कर सकते हैं। पंचायत समिति और ग्राम पंचायत के चुनाव अलग-अलग संस्थाओं से संबंधित होने के बावजूद स्थानीय स्तर पर सक्रिय समूहों और व्यक्तियों के माध्यम से इनके बीच संपर्क विकसित हो सकता है।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रामीण चुनावों को केवल जातीय समीकरणों के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है। सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यक्तिगत व्यवहार, पारिवारिक संबंध, आर्थिक-सामाजिक सहयोग, युवा चेतना, स्थानीय नेतृत्व और चुनावी प्रबंधन भी महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक कारक हैं।

अंततः नूनिया गोठड़ा का यह अध्ययन इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि भारतीय ग्रामीण लोकतंत्र निरंतर परिवर्तनशील है। परंपरागत सामाजिक संरचनाओं के साथ नई पीढ़ी, डिजिटल संचार और संगठनात्मक राजनीति नए जनमत का निर्माण कर रहे हैं। इसलिए पंचायती राज संस्थाओं का अध्ययन स्थानीय लोकतंत्र, सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक भागीदारी को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] भारत सरकार। (1992)। संविधान (73वाँ संशोधन) अधिनियम, 1992। भारत का राजपत्र।
[2] भारत सरकार। भारत का संविधान। पंचायती राज से संबंधित भाग-9।
[3] राजस्थान सरकार। राजस्थान पंचायती राज अधिनियम, 1994।
[4] राजस्थान सरकार। राजस्थान पंचायती राज नियम, 1996।
[5] गांधी, एम. के. ग्राम स्वराज। नवजीवन प्रकाशन।
[6] दहिया, एस. (संपादित)। पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास से संबंधित अध्ययन।
[7] चंद्रन, डी. (संपादित)। ग्रामीण समाज, स्थानीय शासन एवं लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण से संबंधित अध्ययन।
[8] Putnam, R. D. (1993). Making Democracy Work: Civic Traditions in Modern Italy. Princeton University Press.
[9] Bourdieu, P. (1986). The forms of capital. In J. Richardson (Ed.), Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education. Greenwood.
[10] Ostrom, E. (1990). Governing the Commons: The Evolution of Institutions for Collective Action. Cambridge University Press.
[11] स्थानीय चुनाव परिणाम, नूनिया गोठड़ा, वर्ष 2026। शोधकर्ता को उपलब्ध विवरण।
[12] नूनिया गोठड़ा के स्थानीय निवासियों से प्राप्त क्षेत्रीय सूचनाएँ। शोधकर्ता के संकलित विवरण।

©IJRASET: All Rights are Reserved

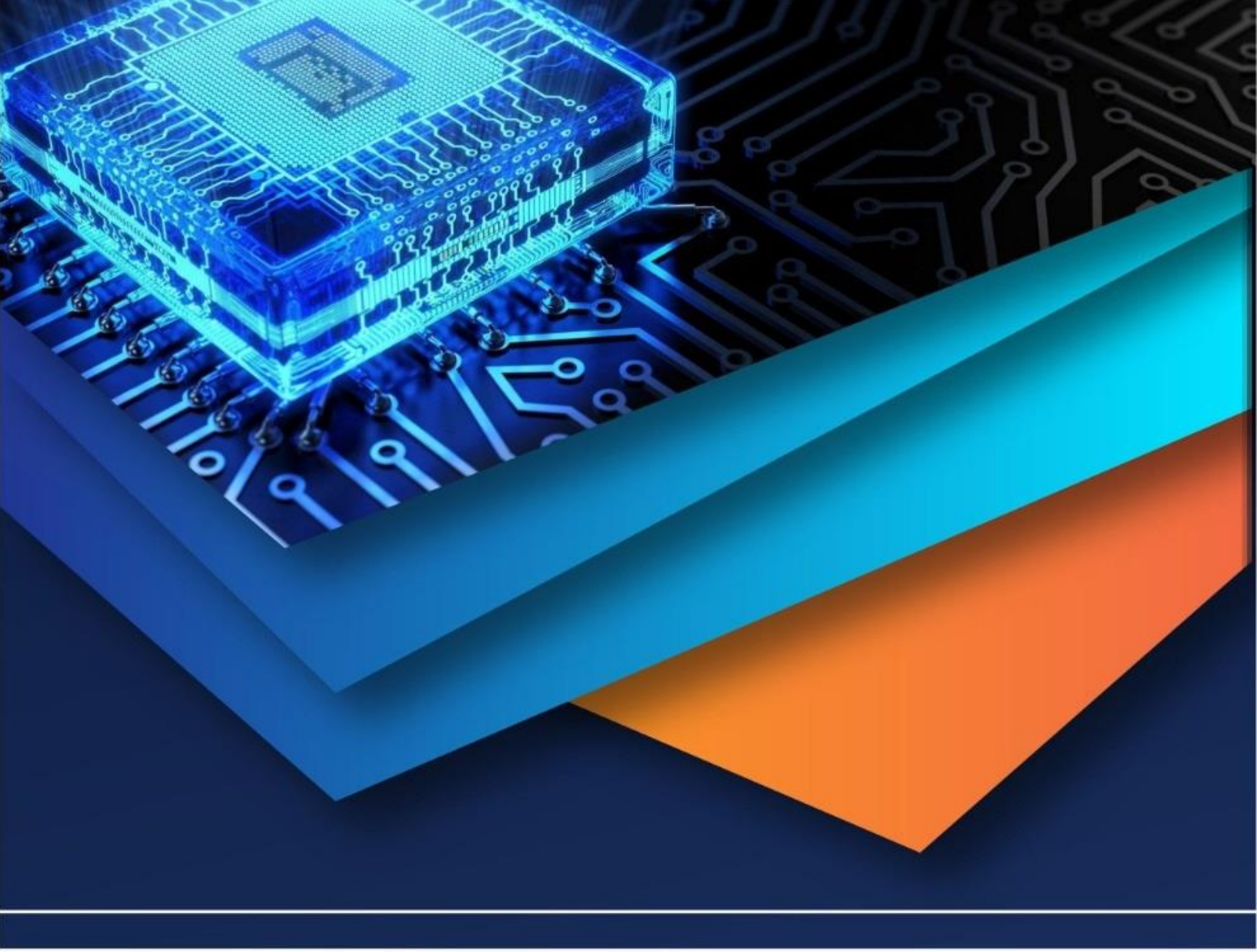

10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)